8वाँ दीक्षांत समारोह
12 नवम्बर, 2025

श्री संतोष कुमार गंगवार
माननीय राज्यपाल-सह-विश्वविद्यालयों के
कुलाधिपति, झारखण्ड
का संबोधन

बिरसा कृषि विश्वविद्यालय
राँची -834006 (झारखण्ड)

माननीय केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री श्री संजय सेठ जी, माननीया मंत्री, कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग, झारखण्ड सरकार श्रीमती शिल्पी नेहा तिर्की जी, बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ० सुनील चन्द्र दुबे जी, प्रबंध पर्षद एवं विद्वत परिषद् के सदस्यगण, विश्वविद्यालय के शिक्षकों, वैज्ञानिकों, पदाधिकारियों, कर्मियों, प्रिय छात्र-छात्राओं और उनके अभिभावकों, मीडिया के साथियों, देवियों एवं सज्जनों!

जोहार! नमस्कार!

1. बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के 8वें दीक्षांत समारोह में सम्मिलित होकर मुझे विशेष हर्ष की अनुभूति हो रही है। इस अवसर पर यहाँ उपस्थित सभी का मैं इस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में हार्दिक अभिनंदन करता हूँ। यह दिन केवल उपाधि प्राप्त करने का क्षण नहीं, बल्कि एक नई यात्रा की शुरुआत का भी पर्व है।

2. सबसे पहले, मैं उन सभी विद्यार्थियों/शोधार्थियों को हार्दिक बधाई देता हूँ जो आज उपाधि ग्रहण कर रहे हैं। साथ ही, उनके अभिभावकों, शिक्षकों और मार्गदर्शकों को भी बधाई देता हूँ, जिनकी प्रेरणा व परिश्रम से यह संभव हो सका।

3. दीक्षांत समारोह प्रत्येक विद्यार्थी के लिए एक यादगार क्षण होता है, जिसमें मेहनत, संघर्ष, सीख, साधना और आत्म-विश्वास का समावेश होता है। विद्यार्थी ही विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा, पहचान और उपलब्धि होते हैं।

4. मेरे प्रिय विद्यार्थियों, भारत की आत्मा गाँवों में बसती है और गाँवों की आत्मा कृषि में है। कृषि केवल उत्पादन ही नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, परंपरा, परिवार, पर्यावरण और जीवन-दर्शन से गहराई से जुड़ी हुई है। भगवान बिरसा मुंडा की धरती झारखण्ड कृषि, वनों, जल संसाधनों और समृद्ध जैव-विविधता से परिपूर्ण है। हमारे जनजाति समाज ने हमेशा प्रकृति के साथ संतुलन बनाकर चलने की सीख दी है।

5. किसान केवल 'अन्नदाता' ही नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का आधार हैं। उनका श्रम, धैर्य और समर्पण हमारे जीवन, हमारे समाज और हमारी अर्थव्यवस्था को स्थिरता प्रदान करता है। समाज में किसान का सम्मान ही देश की समृद्धि का वास्तविक मूल्य है। मेरा आग्रह है कि हम कृषि को केवल आजीविका के रूप में नहीं, बल्कि सम्मान और नवाचार के क्षेत्र के रूप में देखें।

6. मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता है कि इस वर्ष 1021 विद्यार्थी उपाधि प्राप्त कर रहे हैं और इनमें छात्राओं की संख्या अधिक है। यह बदलते भारत की नई तस्वीर है। एक बेटी शिक्षित होती है, तो केवल परिवार ही नहीं, पूरा समाज शिक्षित होकर आगे बढ़ता है।

7. प्रिय छात्र-छात्राओं, आप सभी आज उस चरण में प्रवेश कर रहे हैं जहाँ आपके लिए अनेक नए अवसर और चुनौतियाँ आपका इंतज़ार कर रहे हैं। आपमें से कुछ आगे उच्च शिक्षा ग्रहण की दिशा में अग्रसर होंगे, कुछ अनुसंधान में योगदान देंगे, कुछ कृषि सेवा या प्रशासनिक पदों पर जाएँगे और कुछ उद्यमिता की राह चुनेंगे। मैं पूर्ण विश्वास के साथ कहता हूँ कि आपके भीतर वह ज्ञान, कौशल, दृष्टि और चरित्र है, जो आपको आगे बढ़ने, निर्णय लेने और अपने जीवन का पथ स्वयं निर्धारित करने में सक्षम बनाता है।

8. हमारा भारत आज दुनिया का सबसे युवा देश है। लगभग 65% आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है। यह युवा शक्ति आने वाले 25 वर्षों में भारत को विकसित राष्ट्र बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत आज सबसे तेजी से उभरती वैश्विक अर्थव्यवस्था है। पूरी दुनिया भारत की प्रतिभा, नवाचार भावना और नेतृत्व क्षमता को सम्मान से देख रही है।

9. कृषि भारत की अर्थव्यवस्था की नींव है। कोरोना महामारी के दौरान कठिन समय में जब अनेक क्षेत्र संकट से घिरे थे, तब कृषि ही वह क्षेत्र था जिसने देश की अर्थव्यवस्था को स्थिर रखा। हमारे किसान, कृषि वैज्ञानिक और कृषि प्रसार कार्यकर्ता, वास्तव में इस देश के सच्चे विकास-नायक हैं। परंतु, इसके साथ मिट्टी की उर्वरता में गिरावट, जल संरक्षण की कमी, कृषि उत्पादों में पोषक तत्वों का घटता स्तर और किसानों को उचित मूल्य न मिल पाना आदि चुनौतियाँ भी हैं। इन चुनौतियों का समाधान किसानों और वैज्ञानिकों के संयुक्त प्रयास से ही संभव है।

मेरा भी कृषि से व्यापक सम्बन्ध रहा है और मैं किसानों की समस्या को समझ सकता हूँ। हमारे कृषि वैज्ञानिकों को किसानों की समस्या का हल करने हेतु समर्पित रहना होगा, उन्हें अपने अनुसंधान की किरणों को खेतों तक पहुंचाना होगा।

10. मैं यहाँ उल्लेख करना चाहूँगा कि झारखंड खनिज-संपन्न राज्य है, परंतु यहाँ की बड़ी आबादी कृषि पर निर्भर है। यहाँ वर्षा तो पर्याप्त होती है, परंतु पठारी भूमि प्रकृति होने के कारण वर्षा जल का अधिकांश भाग बिना उपयोग के बह जाता है। इस स्थिति में जल संरक्षण, सूक्ष्म सिंचाई, फसल विविधीकरण, लघु एवं एकीकृत कृषि मॉडल और पशुपालन, मधुमक्खी पालन, लाह एवं मशरूम उत्पादन आदि ये वे क्षेत्र हैं जहाँ अपार रोजगार और आय-वृद्धि की संभावनाएँ हैं। प्रसन्नता है कि झारखण्ड ने दलहन उत्पादन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया है, जिसके परिणामस्वरूप राज्य को कई बार 'कृषि कर्मण पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है।

11. मुझे हर्ष है कि सब्जी उत्पादन के मामले में हम न सिर्फ आत्मनिर्भर हैं, बल्कि पड़ोसी राज्यों को निर्यात भी करते हैं। राज्य में अधिकांश किसान छोटे जोत के हैं और वे अपनी आजीविका के लिए विभिन्न विकल्पों की तलाश करते रहते हैं। ऐसे में यह आवश्यक है कि हम उन्हें तकनीक, प्रशिक्षण, बाजार से जोड़ने और कृषि आधारित उद्यमों को प्रोत्साहित करने पर विशेष ध्यान दें। किसानों को कम खेत से अधिक आय कैसे हो, हमारे वैज्ञानिकों को बताना होगा।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि बिरसा कृषि विश्वविद्यालय इस दिशा में कार्य कर रहा है। हमें बताया गया कि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित सूकर नस्ल 'झारसूक' की आज पूरे देश में माँग बढ़ रही है। मत्स्य उत्पादन के क्षेत्र में भी राज्य ने उल्लेखनीय प्रगति की है, जिसके परिणामस्वरूप झारखण्ड न केवल आत्मनिर्भर हुआ है, बल्कि निर्यात के क्षेत्र में भी आगे बढ़ रहा है।

12. प्रिय विद्यार्थियों, आप जहाँ भी जाएँ, अपनी मातृभूमि, अपने गाँव, अपने किसान और अपनी जड़ों से जुड़े रहें। प्रगति तभी सार्थक है, जब उसकी रोशनी समाज तक पहुँचेगीं। आप बिरसा कृषि विश्वविद्यालय के ब्रांड एम्बेसडर हैं। आपकी उपलब्धियाँ ही इस संस्थान की पहचान बनेंगी।

13. मैं कामना करता हूँ कि आप जिस भी क्षेत्र में जाएँ, मेहनत करें, ईमानदारी रखें और अपने माता-पिता, गुरुओं, इस विश्वविद्यालय और झारखंड का नाम ऊँचा करें।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!